वाराणसी शहर के हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

विनिता नायक*

मानव विकास की अवस्थाओं में से किशोरावस्था में शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन तीव्र एवं अधिक मात्रा में होते हैं इसलिए इसे परिवर्तनों का काल भी कहा जाता है। स्टेनले हाल ने इसे संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था/काल कहा है। किशोरों में स्थिरता एवं वातावरण के साथ समायोजन का अभाव पाया जाता है। इनके सम्मुख सामान्यतः स्वास्थ्य, सांवेगिक व सामाजिक समस्याएँ आती हैं। किशोर अपने आपको इसमें समायोजित करने हेतु संघर्ष करता हैं। डॉ0 अरूण कुमार सिंह ने हाईस्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन के निम्नांकित पाँच क्षेत्रों का चयन किया है :

- गृह समायोजन
- स्वास्थ्य समायोजन
- सामाजिक समायोजन
- सांवेगिक समायोजन
- विद्यालय समायोजन

एक हाईस्कूल स्तर का विद्यार्थी जिसकी अवस्था लगभग चौदह या पंद्रह वर्ष (किशोरावस्था) की होती है, सर्वप्रथम अपने आपको अपने घर तथा स्वास्थ्य के साथ समायोजित करने का प्रयास करता है। इस अवस्था में वह संवेगों की तीव्र धारा में अपना संतुलन बनाए रखने का भरसक प्रयास करता है। किशोर अपने दैनिक जीवन के लगभग छः घण्टे विद्यालय में व्यतीत करता है। वहाँ उसके साथ अनेकों शैक्षिक व अशैक्षिक समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं। किशोर इन समस्याओं का सामना अपनी शारीरिक व मानसिक क्षमता के साथ करता है। ये क्षमताएं हर बालक में समान रूप से वितरित नहीं रहती हैं परन्तु शिक्षा इन समस्याओं का पोषण अवश्य करती हैं।

वर्तमान समय में किशोर छात्रों में समायोजन की समस्या अधिक मात्रा में देखने को मिलती हैं। यह समय पहले से ज्यादा चुनौतीपूर्ण एवं तीव्र परिवर्तनशील हो गया है जिसमें छात्रों को प्रायः नयी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ छात्र सफलतापूर्वक समस्याओं का सामना कर लेते हैं और जो समस्याओं का सामना नहीं कर पाते हैं वे कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं।

समायोजन शब्द के दो अर्थ हैं– प्रथम अर्थ में समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन कर अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है तथा दूसरे

* असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शेपा, वाराणसी।

अर्थ में समायोजन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों की मांगों के मध्य शारीरिक एवं मानसिक संतुलन स्थापित करता है।

प्रस्तुत शोध में हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देश्य–

- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की विद्यालय समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना– प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के सत्यापन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं को प्रतिपादित किया गया :

- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- हाइस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की विद्यालय समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध समग्र– प्रस्तुत शोध का समग्र वाराणसी शहर में स्थित उ0प्र0 बोर्ड द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हाईस्कूल के सभी विद्यार्थी हैं।

शोध प्रतिदर्श– प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत वाराणसी शहर के उ0प्र0 बोर्ड द्वारा संचालित चार माध्यमिक विद्यालयों (2 बालक विद्यालय एवं 2 बालिका विद्यालय) का चयन यादृच्छिक विधि की उपविधि लॉटरी पद्धति से किया गया। इसके बाद प्रत्येक विद्यालय से लॉटरी पद्धति द्वारा ही 50–50 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया। अतः कुल 200 विद्यार्थियों का प्रतिदर्श निर्धारित किया गया जिसमें 100 छात्र एवं 100 छात्राएं सम्मिलित किये गये।

शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध में समायोजन को मापने के लिए ए0के0 सिंह एवं ए0 सेन गुप्ता द्वारा निर्मित हाईस्कूल समायोजन तालिका (Highschool Adjustment Inventory, HSAI) का प्रयोग किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ– प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्ष निकालने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया :

- मध्यमान (Mean)
- प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation)
- टी–परीक्षण (t-test)

सांख्यिकीय विश्लेषण से उत्पन्न परिणामों का विवरण तालिका 1 से तालिका 5 में निम्नवत् प्रस्तुत है :

तालिका–1– हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता का तुलनात्मक विवरण

समूह	N	Mean	S.D.	SEM	SEDM	t-value
छात्र	100	21.06	5.07	0.51	0.69	2.45*
छात्राएँ	100	22.22	4.56	0.46		

* .05 स्तर पर सार्थक

तलिका–1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि छात्रों की गृह समायोजन क्षमता का मध्यमान 21.06 एवं प्रमाणिक विचलन 5.07 तथा छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता का

मध्यमान 22.22 एवं प्रामाणिक विचलन 4.56 है। प्राप्त टी का मान 2.45 है जो 0.05 विश्वास स्तर के मान से अधिक है जिससे स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है। इस सार्थक अन्तर की दिशा छात्राओं की ओर है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में गृह समायोजन क्षमता अधिक होती है। प्राप्त परिणाम के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गई।

तलिका–2– हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता का तुलनात्मक विवरण

समूह	N	Mean	S.D.	SEM	SEDM	t-value
छात्र	100	20.62	4.84	0.484	0.714	1.99*
छात्राएँ	100	19.2	5.25	0.525		

* .05 स्तर पर सार्थक

तलिका–2 से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 20.62 एवं 19.2 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.84 एवं 5.25 है। प्राप्त टी का मान 1.99 है जो 0.05 विश्वास स्तर के मान से अधिक है जिससे स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है तथा इस अन्तर की दिशा छात्रों की ओर उन्मुख है। परिणामतः यह कहा जा सकता है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन अधिक होता है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना (2) अस्वीकार की गई।

तालिका–3– हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक विवरण

समूह	N	Mean	S.D.	SEM	SEDM	t-value
छात्र	100	18.78	6.12	0.612	0.742	5.08**
छात्राएँ	100	15.01	4.2	0.42		

** .01 स्तर पर सार्थक

तलिका–3 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 18.78 एवं 15.01 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 6.12 एवं 4.2 है। प्राप्त टी का मान 5.08 है जो 0.01 विश्वास सतर के मान से अधिक है जिससे स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है। मध्यमान की

दिशा से यह कहा जा सकता है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में सामाजिक समायोजन अधिक होता है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना (3) अस्वीकार की गई।

तालिका–4– हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक विवरण

समूह	N	Mean	S.D.	SEM	SEDM	t-value
छात्र	100	14.86	5.85	0.585	0.742	3.75**
छात्राएँ	100	17.64	4.54	0.454		

** .01 विश्वास स्तर पर सार्थक

तलिका–4 से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 14.86 एवं 17.64 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.85 एवं 4.54 है। प्राप्त टी का मान 3.75 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित मान से अधिक है जिससे स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है अर्थात छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में सांवेगिक समायोजन अधिक होता है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना (4) अस्वीकार की गई।

तालिका–5– हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की विद्यालयी समायोजन क्षमता का तुलनात्मक विवरण

समूह	N	Mean	S.D.	SEM	SEDM	t-value
छात्र	100	23.16	2.98	0.298	0.649	4.44**
छात्राएँ	100	20.28	5.76	0.576		

** .01 स्तर पर सार्थक

तालिका–5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की विद्यालयी समायोजित क्षमता का मध्यमान क्रमशः 23.16 एवं 20.28 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.98 एवं 5.76 है। प्राप्त टी का मान 4.44 है जो 0.01 विश्वास स्तर के मान से अधिक है जिससे स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की विद्यालयी समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है अर्थात छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में विद्यालयी समायोजन अधिक होता है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या– आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् छात्राओं की गृह समायोजन क्षमता छात्रों से अधिक है।

- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् छात्रों की स्वास्थ्य समायोजन क्षमता छात्राओं से अधिक है।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् छात्रों की सामाजिक समायोजन क्षमता छात्राओं से अधिक है।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता छात्रों से अधिक है।
- हाईस्कूल में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की विद्यालयी समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् छात्रों की विद्यालयी समायोजन क्षमता छात्राओं से अधिक है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर पाया जाता है। शोधकर्ती ने पाया कि छात्र एवं छात्राओं में विभिन्न समायोजन क्षमता भिन्न–भिन्न है। कुछ समायोजन क्षमता छात्रों में अधिक है तो कुछ छात्राओं में अधिक है। जैसे– गृह समायोजन क्षमता छात्राओं में अधिक है तो छात्रों में यह समायोजन क्षमता कम पायी गई। इसी प्रकार स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं विद्यालयी समायोजन क्षमता छात्रों में अधिक पायी गई जबकि छात्राओं में सांवेगिक समायोजन क्षमता अधिक पायी गई।

समायोजन क्षमता पर व्यक्ति के पारिवारिक वातावरण, सामाजिक वातावरण एवं आर्थिक दशा का प्रभाव पड़ने की सम्भावना होती है। जन्म से सभी बालक लगभग समान गुण के साथ जन्म लेते हैं परन्तु व्यक्तित्व का विकास वातावरण से प्रभावित होता है। सामाजिक परिवेश में अपने आपको समायोजित करने के लिए वह जिस प्रकार का व्यवहार करता है ठीक उसी प्रकार उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्तित्व तथा समायोजन क्षमता के विकास में शिक्षा व्यापक भूमिका निभाती है क्योंकि शिक्षा बालक में अंतर्निहित शक्तियों के विकास को कहते हैं। यदि छात्रों एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता में अन्तर है तो शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं की उपेक्षा भी इसका बहुत बड़ा कारण हो सकता है। प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों का प्रयोग विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन–परामर्श देने के लिए किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

- कपिल, एच0के0 (2002) : अनुसंधान विधियाँ, एच0के0 प्रकाशन आगरा।

- गैरेट हेनरी एवं वुडवर्थ, आर0एस0 (1989) : शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- गुप्ता, एस0पी0 (2008) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- पाण्डेय, कल्पलता एवं श्रीवास्तव, शंकर शरण (2006) : शिक्षा मनोविज्ञान भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि, टाटा मैकग्रॉ हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के0पी0 (2009) : नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, तृतीय संस्करण विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।
- सारस्वत, मालती (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सिंह, अरूण कुमार (2011) : शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना।
- सिंह, अरूण कुमार (2012) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, नई दिल्ली।